न्यासिता पर गाँधी जी के विचार : भारतीय समाज के पुनर्निर्माण का एक उपकरण

डॉ0 (श्रीमति) नीरज

असि0 प्रोफे0, राजनीति विज्ञान विभाग,

राजकीय महिला महाविद्यालय, कुरावली, मैनपुरी (उ0प्र0), भारत ।

सारांश

मोहनदास करमचन्द गाँधी को ज्यादातर लोग बापू या महात्मा गाँधी के नाम से जानते हैं। गाँधी जी को आधुनिक युग का असाधारण पुरूष, प्रगाढ़, देश प्रेमी, महान राष्ट्रीय नेता, श्रेष्ठ समाज सुधारक एवं उच्च कोटि का राजनीतिज्ञ माना जाता है। न्यासिता के विचार ने गाँधी जी के विचार की आधारशिला का गठन किया है। पूँजीवाद और निहित स्वार्थों के अन्यायी और अनुचित आधार पर हमला करते हुए न्यासिता के अनुकूलन के लिए सिफारिश की। गाँधी आमूल समतावादी थे, उन्होंने विश्वास नहीं किया कि जब तक अमीर और लाखों भूखे लोगों के बीच गहरी खाई बनी रहेगी तब तक अहिंसा के आदर्श को समाज में महसूस किया जा सकता है। वह मानवतावादी पर्यावरण और लोगों के अभिन्न विकास में ओर लोगों के सीधे नियन्त्रण में जमीनी स्तर पर एक विकेन्द्रीकृत सामाजिक–आर्थिक, राजनीतिक व्यवस्था में विश्वास करते थे। उन्होंने एक वैकल्पिक आदत के लिए प्रयास किया जो कि न्यासिता थी और वह साफ तौर पर स्थानीय या विशिष्ट सन्दर्भों में प्रासंगिक था। गाँधी जी मानते थे कि केवल न्यासिता ही भारतीय समाज का पुर्नउत्थान कर सकती है।

मूल शब्द– *न्यासिता, अहिंसक, पूँजीवाद, वर्गहीन समाज, सामाजिक–आर्थिक व राजनीतिक व्यवस्था।*

शोध पत्र का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार हैः

डॉ0 (श्रीमति) नीरज

न्यासिता पर गाँधी जी के विचार : भारतीय समाज के पुनर्निर्माण का एक उपकरण

शोध मंथन, जून 2018,
पेज सं0 159—167

Article No. 24
http://anubooks.com
?page_id=581

डॉ0 (श्रीमति) नीरज

प्रस्तावना

मोहनदास करमचन्द गांधी को ज्यादातर लोग बापू या महात्मा गांधी के नाम से जानते हैं। गांधी जी को आधुनिक युग का असाधारण पुरुष, प्रगाढ़ देश प्रेमी, महान राष्ट्रीय नेता, श्रेष्ठ समाज सुधारक एवं उच्च कोटि का राजनीतिज्ञ माना जाता है। अपने जीवनकाल के दौरान, गांधी जी ने राष्ट्रीय आन्दोलन को, जो अब तक समाज के कुछ वर्गों तक ही सीमित था, एक जन–आन्दोलन में बदल दिया। गांधी जी का आन्दोलन न केवल ब्रिटिश शासन के खिलाफ था बल्कि उन घोर सामाजिक संरचनाओं, परम्पराओं, मानदण्डों और मूल्यों के खिलाफ था, जो भारत की सदियों पुरानी परम्पराओं के नाम पर जायज़ माने जाते थे। उन्होंने एक मुक्त भारत चाहा, जो पश्चिमी दिशा का अनुकरण नहीं करेगा और उसकी समस्त समस्याओं का समाधान उसके भीतर से ही आएगा और स्वतन्त्र भारत की अर्थव्यवस्था और राज्य व्यवस्था अन्य आधुनिक औद्योगिक देशों से अलग होगी। उन्होंने इस तथ्य पर भी बल दिया कि यदि असली भारत को देखना है तो वह उसके गांवों में बसता है।

अतः इस शोध पत्र के माध्यम से मेरा उद्देश्य भारतीय समाज के पुनर्निर्माण के लिए न्यासिता पर गांधी जी के विचारों और उनके उद्देश्यों पर ध्यान केन्द्रित करने का प्रयास है।

न्यासिता पर गाँधी के विचार

न्यासिता के विचार ने गांधी जी के विचार की आधारशिला का गठन किया है। पूंजीवाद और निहित स्वार्थों के अन्यायी और अनुचित आधार पर हमला करते हुए न्यासिता के अनुकूलन के लिए सिफारिश की। गांधी जी के न्यासी विचारों में भगवद् गीता, उपनिषद्, भारतीय सांस्कृतिक विरासत, जॉन रस्किन, हेनरी डेविड थोरो और लियो टॉलस्टाय से प्रेरणा ली गई। वह माउण्ट के उपदेश से बेहद प्रभावित थे। गांधी जी मूलतः कर्म में विश्वास रखने वाले व्यक्ति थे। उनका जीवन सामाजिक–आर्थिक और राजनीतिक असमानता और अन्याय के खिलाफ एक सतत् संघर्ष है। वह कर्म के प्रति निःस्वार्थ थे। उन्होंने अहिंसा के विज्ञान और कला को वरीयता दी और जीवन की सभी गतिविधियों को इसके दायरे में लाये। गांधी जी का मत था कि जो अर्थव्यवस्था सभी की भलाई के लिए उन्मुख है वह अच्छी है; एक नाई के काम का वही मूल्य है जो एक वकील के; और श्रमिक का जीवन जीने लायक है।[1]

गांधी जी के लिए न्यासिता का उनका विचार एक आर्थिक समीचीन या कोई अस्थायी नहीं था। यह साथ ही दार्शनिक अपील और धार्मिक मंजूरी थी। 4 फरवरी, 1916 को बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के उद्घाटन समारोह को सम्बोधित करते समय उन्होंने सजे–धजे कुलीन लोगों से निवेदन किया कि वह मंच पर आयें और अपने आभूषणों को खुद उतारकर दे दें और भारत में अपने देशवासियों के लिए इसे ट्रस्ट के रुप में संजो कर रखें। उन्होंने कहा कि यदि अमीर लोग ट्रस्टी के रूप में समाज की ओर से अपने अधिशेष धन को रखते हैं और समाज के लिए धन कमाने में अपनी प्रतिभा का उपयोग करते हैं, तो एक समतावादी समाज की हिंसा और रक्तपात के बिना ही शुरुआत हो जायेगी। वह कर्म के प्रति निःस्वार्थ थे जो गीता की शिक्षा के साथ संगत था और उन्होंने लगातार उसका पालन किया। जैन धर्म ने सजहानुभूति के रूप में

गांधी के विचार को दिशा दी और उनके कर्म को आकार दिया। उन्होंने अहिंसा के विज्ञान और कला को वरीयता दी और जीवन की सभी गतिविधियों को इसके दायरे में लाये। टॉलस्टॉय की परमेश्वर का राज्य तुम्हारे भीतर है ने पूरी तरह से अहिंसा धर्म के लिए उनका आत्म समर्पण करा दिया था। जॉन रस्किन की पुस्तक 'अन्टू द लास्ट' का भी गांधी के जीवन पर भारी प्रभाव पड़ा था और वह किताब उनके जीवन का महत्वपूर्ण मोड़ थी और उन्होंने सीखा कि जो अर्थव्यवस्था सभी की भलाई के लिए उन्मुख है वह अच्छी है; एक नाई के काम का वही मूल्य है तो एक वकील के; और श्रमिक का जीवन जीने लायक है। वास्तव में, गांधी ने ''ट्रस्टी शब्द'' का पहली बार प्रयोग पोलक को लिखे एक पत्र में किया था जो उस समय भारत में थे। गांधी जी व्यक्तिगत रूप से विरासत में मिले धन में विश्वास नहीं रखते थे। उन्होंने सेवा के लिए अपने धन का उपयोग करने के लिए समाज के धनी वर्गों को सलाह दी। उन्होंने बहस की, कि एक ट्रस्टी का जनता के अलावा कोई वारिस नहीं है। उनका विचार था कि सब कुछ भगवान का था और भगवान से था, जब कोई व्यक्ति अपने आनुपातिक हिस्से से अधिक पाता है, तो वह भगवान के लोगों के लिए उस हिस्से का एक ट्रस्टी बन जाता है। उन्होंने भारत में पूंजीवादी वर्ग को चेतावनी दी कि जब तक वे उस त्रासदी से बचने के लिए जनता के कल्याण के न्यासी नहीं बनते हैं और अपनी प्रतिभा का उपयोग खुद के लिए धन एकत्रित करने के लिए नहीं, बिल्क एक परोपकारी भावना से जनता की सेवा करने के लिए करते हैं, तब तक वे या तो जनता को खत्म कर देंगे या उनके द्वारा नष्ट कर दिए जायेंगे। गांधी जी ने कहा है, ''भोजन और वस्त्र सब व्यक्तियों को बिल्कुल उसी प्रकार उपलब्ध होना चाहिए, जिस प्रकार उनको ईश्वर की वायु और जल उपलब्ध है। भोजन और वस्त्र को अन्य व्यक्तियों के शोषण का साधन बनाना उचित नहीं है।'' अपने इस तर्क के आधार पर गांधी जी ने सविश्वास कहा है कि उत्पादन के साधनों एवं जीवन की प्रारम्भिक आवश्यकताओं पर किसी देश, जाति या समूह का स्वामित्व होना घोर अन्याय है।[2]

न्यासिता पर गाँधीवादी विचारों के आयाम

गांधी आमूल समतावादी थे। उन्होंने विश्वास नहीं किया कि जब तक अमीर और लाखों भूखे लोगों के बीच गहरी खाई बनी रहेगी तब तक अहिंसा के आदर्श को समाज में महसूस किया जा सकता है। उनका आदर्श लगभग समानता थी। उन्होंने वकालत की, कि आर्थिक समानता कभी भी नहीं होना चाहिए कि हर किसी के द्वारा सांसारिक सम्पत्ति की बराबर राशि पर अधिकार होगा। पर इसका मतलब होगा कि हर किसी के पास रहने के लिए उचित घर, खाने के लिए पर्याप्त और संतुलित भोजन और खुद को कवर करने के लिए पर्याप्त खादी होगा। इसका मतलब यह भी है कि इन क्रूर असमानताओं को विशुद्ध रूप से अहिंसक तरीकों से खत्म कर दिया जाएगा।

1. अहिंसक सामाजिक व्यवस्था

न्यासिता पर गांधी जी की अवधारणा अहिंसक समाजवाद या समाजवाद का अहिंसक तरीकों के माध्यम से प्रयोग के उनके सिद्धान्त के कारण भी थी। अहिंसा के प्रेरणा के रूप में गांधी जी एक समतावादी समाज की स्थापना करना चाहते थे। जहां कोई शोषण या हिंसा नहीं

थी। अहिंसा पर उनके विश्वास ने गांधी जी को न्यासिता का एक वकील बनाया। उन्होंने अहिंसा के आधार पर न्यासिता की अपनी प्रणाली को उचित ठहराया। उसे करने के लिए उनके लिए राज्य हिंसा की बहुत अवतार था और यदि आर्थिक शक्तियां भी राज्य को दे दी जाती हैं तो उस हिंसा का बल और बढ़ाया जा सकता है। इसलिए गांधी जी ने हिंसा से बचने के लिए एक वैकल्पिक उपकरण के रूपमें न्यासिता की प्रणाली के बारे में सोचा। गांधी जी का मत था कि राज्य हिंसा का एक संकेन्द्रित रूप पेश करता है। व्यक्ति के पास आत्मा होती है और राज्य आत्माहीन तन्त्र है, जो कभी भी हिंसा का त्याग नहीं कर सकता।

अतः स्पष्ट है कि गांधी जी राज्य को सम्मान की दृष्टि से नहीं देखते हैं, उनका मानना है कि राज्य व्यक्ति के अधिकारों का हनन करता है, और व्यक्तिगत स्वतन्त्रता के मार्ग में अवरोध उत्पन्न करता है। और इसे हिंसा से रोका भी नहीं जा सकता, क्योंकि इसका अस्तित्व का आधार वही है। इसलिए मैं न्यासिता का सिद्धान्त पसन्द करता हूँ।[3]

2. सामुदायिक कल्याण

हालांकि, पूंजीवाद की प्रणाली के तहत आदमी के क्रूर शोषण ने गांधी के विरोध को पैदा किया और उन्होंने साफ शब्दों में प्रणाली की निन्दा की। अर्जनशील समाज की उनके द्वारा निन्दा दलित मानवता के लिए उनकी तीव्र भावनाओं और गहरी चिन्ता से उपजी थी। उनके लिए किसी आर्थिक प्रणाली को पहचानने का पैमाना मानव कल्याण ही था। उन्होंने आम भलाई के पैमाने पर आर्थिक संस्थानों को आंका। वास्तव में, यह उनका मूलमन्त्र था।

गांधी जी ने एक व्यावहारिक प्रस्ताव के रूप में न्यासिता की अपनी अवधारणा पर विचार किया, जो धनी और संग्रहशीलता और लालच के अपने पापों के रखने वाले वर्ग को आजाद करा सकता है, और एक समतावादी समाज के पक्ष में एक बदलाव प्रभावित कर सकता है। उन्होंने कहा, हर तरह से अपने करोड़ रुपये कमाइये लेकिन ख्याल रहे कि यह धन तुम्हारा नहीं है, यह लोगों का है। आप अपनी वैध जरूरतों के लिए आवश्यकतानुसार लें और शेष का उपयोग समाज के लिए करें। गांधी जी की सर्वोदय की अवधारणा ने उन्हें न्यासिता की तकनीक अपनाने के लिए कदम दर कदम प्रेरित किया। गांधी जी ने माना कि व्यक्ति का परम लक्ष्य भगवान की प्राप्ति है और उसकी सामाजिक राजनीतिक धार्मिक सभी गतिविधियों को भगवान के परम दृष्टिकोण द्वारा निर्देशित किया जाना चाहिए। भगवान को खोजने के लिए एक ही रास्ता है, सत्य के मार्ग पर चलना। गांधी जी का मानना था कि एक पूर्ण जीवन धन के अधिग्रहण और भाग्य के संचय के माध्यम से नहीं प्राप्त किया जा सकता है, बल्कि भगवान की प्राप्ति के माध्यम से सम्भव है, जो सभी मनुष्य की सेवा और साथियों के कल्याण के लिए काम करने से प्राप्त हो सकती है। उनके लिए पूंजी का संचय अनैतिक था; यह उनके संचयहीनता की अपनी अवधारणा के विपरीत था। गांधी जी के लिए धन के संचय में हमेशा हिंसा शामिल है क्योंकि वह असमानता के सिद्धान्त पर आधारित था, इस आधार पर उन्होंने पूंजीवाद को खारिज कर दिया। उन्होंने गूंगा और अर्ध–क्षुधा पीड़ितों की लड़ाई को लड़ा, और उनके लिए जीने का एक सभ्य और उच्च मानक लाने के लिए प्रयास किया।

3.वर्गहीन समाज और रोटी श्रम

गांधी जी ने दृढ़ता से एक वर्गहीन समाज के लिए वकालत की। उन्होंने राजी कर लिया कि विभिन्न व्यक्तियों के बीच श्रम विभाजन अपरिहार्य था। स्वाभाविक रूप से शारीरिक श्रम को मानसिक श्रम या मात्र आराम करने से निम्न के रूप में माना गया था। इस प्रकार, गांधी जी को सभी के लिए रोटी श्रम अनिवार्य बनाकर लोगों के बीच समानता की भावना पैदा करने की जरूरत महसूस हुई। उन्होंने टॉलस्टाय और रस्किन से रोटी–श्रम की अवधारणा निकाली। गांधी जी का मत था कि आदर्श राज्य में, हर कोई स्वयं के लिए नहीं बल्कि समाज के लाभ के लिए पूरी तरह से काम करेगा। रोटी–श्रम के कानून का पालन समाज की संरचना में एक मौन क्रान्ति लायेगा।[4]

4. व्यक्ति की अच्छाई

गांधी जी को मनुष्य की बुनियादी अच्छाई में गहरा विश्वास था। व्यक्ति परमात्मा के अंष थे। यदि कुछ व्यक्तियों को कमी थी या वंचित थे तो वह उनके अशुद्ध वातावरण की वजह से था, प्रत्येक व्यक्ति अपने चरित्र में देवत्व का प्रदर्शन करेगा। गांधी जी ने कहा कि सभी के पीछे यह धारणा निहित है कि आध्यात्मिक मूल्यों और भौतिकता की स्थिति के बीच सम्बन्ध स्थापित करके, हृदय परिवर्तन करके बहुत कुछ किया जा सकता है। हृदय परिवर्तन गांधीवादी योजना में पहला और सबसे महत्वपूर्ण चरण है, हृदय परिवर्तन के एक परिणाम के रूप में आर्थिक और राजनीतिक सत्ता का विकेन्द्रीकरण करके, गांधी जी ने एक नए व्यक्ति के साथ ही एक नए समाज के निर्माण करने के प्रति आशा व्यक्त की। एक व्यक्ति को सत्य और अहिंसा की शिक्षा दे दीजिए और सच्चाई से वह व्यक्ति सभी की भलाई के लिए भौतिकता की स्थिति को बदल देगा, यह उनकी उक्ति थी। भौतिकता की स्थिति और व्यक्तिगत चरित्र एक ही सिक्के के दो पहलू हैं, जिसमें व्यक्तिगत चरित्र एक महान पूर्णता है जो अकेले एक स्थायी आधार पर भौतिकता की स्थिति को बदलने की क्षमता रखता है।[5]

5. ग्राम पुनःनिर्माण

इसके लिए उन्होंने समाज में सत्ता के विकेन्द्रीकरण के लिए वकालत की जिसमें प्रत्येक गांव या गांवों की इकाइयों को पंचायतीराज की प्रणाली को लागू करके एक गणतंत्र में बदलना होगा। दरअसल, ग्रामीण जीवन और पंचायत राज के बारे में उनकी स्तुति के बीच बहुत घनिष्ठ संबंध है। गांधी एक देहाती थे और उनके मन में बहुत स्पष्ट था कि आदर्या अहिंसक समाज शहरी आधार की जगह ग्रामीण पर आधारित होना चाहिए। शहरी केन्द्रों के लिए उनकी अवमानना इतनी गहरी था कि उन्होंने सोचा था कि वे केन्द्रित रूप में हिंसा, बलात्कार और शोषण का प्रतिनिधित्व करते हैं। जबकि ग्रामीण स्वैच्छिक सहजता के आदर्श पर आधारित हैं जिसमें सभी स्वेच्छा से एक दूसरे के साथ सहयोग करते हैं। पंचायत गणराज्य सामाजिक आवश्यकताओं के लिए एक लचीली प्रतिकिया होगी और स्वात्तता और सहयोग की अवधारणाओं के आसपास सामाजिक समूहों या संगठनों की एक कड़ी के रूप में हो सकता है। उन्होंने इसीलिए वकालत

की कि इन पंचायतों को पूर्ण अधिकार दिया जाना चाहिए। हर गांव को आत्मनिर्भर और अपने मामलों के प्रबन्धन में सक्षम होना होगा।

अहिंसा के अनन्य भक्त होने के कारण गांधी जी ने अपने आदर्श समाज को इस संसार की वास्तविकता माना है। युक्लिड की बिन्दु की परिभाषा का उल्लेख करते हुए, गांधी जी ने अपने आदर्श समाज के चित्र में यह कह कर दृढ़ विश्वास किया है, ''जिस प्रकार युक्लिड की परिभाषा वाले बिन्दु का, किसी भी व्यक्ति द्वारा अंकित न किये जा सकने पर भी, अविनाशी मूल्य रहा है, उसी प्रकार मेरे चित्र का भी मानव–जाति के जीवित रहने के लिए अपना मूल्य है। यद्यपि यह चित्र पूर्ण में कभी सिद्ध नहीं होगा, तथापि भारत को इस सच्चे चित्र के लिए जीवित रहना चाहिए। हमें किस बात की आवश्यकता है, इसके लिए हमारे पास ठीक चित्र होना चाहिए। तभी हम उससे मिलती जुलती किसी वस्तु को प्राप्त कर सकते हैं। यदि भारत के प्रत्येक ग्राम में प्रजातन्त्र अथवा पंचायती राज्य की स्थापना हुई, तो मेरा दावा है कि मैं अपने इस चित्र की सच्चाई को सिद्ध कर सकूंगा।'' गांधी जी ने सोचा कि इस तरह का समाज अनिवार्य रूप से सुसंस्कृत होगा, क्योंकि उसमें हर कोई अपनी जरूरतों को जानता है। इस प्रकार उन्होंने समाज के अपने संगठन को अभिव्यक्त किया।[6]

क. उत्तराधिकार के अधिकार पर परिसीमा

गांधी को व्यक्तिगत रूप से विरासत में मिले धन में विश्वास नहीं था। उन्होंने सेवा के लिए अपने धन का उपयोग करनें के लिए समाज के धनी वर्गों को सलाह दी। उन्होंने बहस की कि एक ट्रस्टी का जनता के अलावा कोई वारिस नही है। अहिंसा के आधार पर बनाये गए राज्य में न्यासी आयोग विनियमित किया जाएगा। प्रिंसेस और जमींदार अन्य धनी पुरुषों के बराबर होंगे। करोड़पति के बेटे जिनकी उम्र हो गई है और अभी तक अपने माता–पिता के धन के वारिस हैं, विरासत के लिए उपयुक्त नहीं हैं। राष्ट्र इस प्रकार दोहरी हार झेलता है। विरासत राष्ट्र की होनी चाहिए और राष्ट्र फिर से खोदता है क्योंकि वारिस की पूरी संकायों को खंगाला नहीं जाता है और अमीरों के बोझ के नीचे कुचल दिया जाता है।

ख. भारी कराधान और प्रमुख उद्योगों का राष्ट्रीयकरण

साथ ही आर्थिक न्याय और समतावादी समाज के लिए गांधी जी ने, अमीरों पर भारी करारोपण के लिए वकालत की और व्यक्तियों द्वारा अत्यधिक धन पर कब्जे को मानवता के खिलाफ अपराध के रूप में माना जाना चाहिए। उनके लिए धनी लोगों पर अभी तक पर्याप्त रूप से कर लगाया नहीं गया है। एक निश्चित मार्जिन से परे तक कराधान की अधिकतम सीमा कभी नहीं पहुंच सकी। उन्होंने सोचा कि यदि पूंजीपतियों ने न्यासियों में बदल जाने से इन्कार कर दिया, जिसका कि उन्हें विश्वास था, तो मामले में प्रमुख उद्योगों और उत्पादन के अन्य साधनों का राज्य द्वारा राष्ट्रीयकरण की सम्भावना पर विचार किया जा सकता, हालांकि, उन्हें विश्वास था कि पूंजीपति उनकी बात को मानेंगे। इस प्रकार, उन्होंने लिखा मैं अहिंसा के द्वारा मेरी बात के लिए लोगों को कन्वर्ट करके और घृणा के खिलाफ प्यार की ताकतों का दोहन करके आर्थिक समानता को लाऊंगा। राष्ट्रीयकृत उद्योगों को सबसे आकर्षक और आदर्श स्थिति के तहत काम

करना चाहिए, लाभ के लिए नहीं बल्कि मानवता के लाभ के लिए। वह केन्द्रीकरण और बड़े पैमाने पर उत्पादन के खिलाफ थे, क्योंकि उनका मानना था कि केन्द्रीकरण और बड़े पैमाने पर उत्पादन व्यक्ति की नैतिक स्वतन्त्रता को दूषित कर देगा।[7]

ग. भूमि और उद्योग पर राज्य का कम से कम स्वामित्व

गांधी जी ने एक न्यूनतम राज्य स्वामित्व का समर्थन किया उनके लिए राज्य का स्वामित्व निजी स्वामित्व की तुलना से बेहतर है, लेकिन वह भी हिंसा की जमीन पर आपत्तिजनक है। उन्होंने कहा, मेरा दृढ़ विश्वास है कि यदि राज्य ने हिंसा से पूंजीवाद को दबा दिया तो, यह हिंसा के भंवर में फंस जायेगा और किसी भी समय अहिंसा को विकसित करने में असफल हो जायेगा। वह मानते थे कि निजी उद्यमियों और उद्योगपति के स्वामित्व के राज्य के लिए मात्र हस्तांतरण, अधितमक उत्पादन, खपत का उच्च स्तर और राष्ट्र के लिए पर्याप्त समृद्धि सुनिश्चित करने के लिए पर्याप्त नहीं था। हालांकि, वह गरीबों के हित के साथ काफी हद तक चिंतित थे। आधुनिक भारत के पैगंबर के लिए, कम से कम सरकार के साथ ही न्यासिता के विचारों ने जवाब प्रगदान किया। उन्होंने माना कि बेशक कुछ प्रमुख उद्योग आवश्यक थे। आम धारणा थी कि जहाँ लोगों की एक बड़ी संख्या एक साथ काम करेगी वहाँ राज्य स्वामित्व आवश्यक था, लेकिन उन्होंने माना कि बल द्वारा किया गया धनी का हरण उचित नही था। इसके बजाए उन्हें राज्य स्वामित्व के लिए बातचीत की प्रक्रिया में सहयोग करने के लिए आमंत्रित किया जाना चाहिए।[8]

अर्थव्यवस्था उत्पादन और प्रौद्योगिकी के बारे में गांधी जी की योजना में मशीन के लिए स्थान है, लेकिन वह मानव श्रम की जगह नहीं लेगा और कुछ हाथों में सत्ता की एकाग्रता को जगह नहीं होगी। उन्होंने भारी उद्योग से अधिक सरल प्रौद्योगिकी को प्राथमिक महत्व दिया। उन्नत प्रौद्योगिकी भारत जैसे देश में विशाल बेरोजगारी का कारण बन सकती है, जबकि सरल तकनीक, बड़े पैमाने पर रोजगार पैदा कर सकती है। इस प्रकार उन्होंने भारी मशीनरी द्वारा बड़े पैमाने पर उत्पादन की तुलना में अधिक संख्या में लोगों द्वारा उत्पादन को प्राथमिकता दी। वह चाहते थे कि उपयुक्त प्रौद्योगिकी और विचारधारा को आत्म–नियन्त्रण की संस्कृति के साथ चलना चाहिए।

घ. सामाजिक मजबूरी की तकनीक

गांधी ने अमीर के लिए न्यासिता की उपलब्धि के साधन का सुझाव दिया। यदि अमीर ने स्वेच्छा से अपने धन के एक ट्रस्टी के रूप में कार्य नहीं किया है, तो उन्हें बुरा नहीं लगेगा कि उन्हें चेतावनी दी जाये कि यह उनके लिए विनाशकारी होगा। वे अब लॉडर्स और स्वामी के रूप में जारी नहीं रख सकते हैं। वे उज्जवल भविष्य पा सकते थे यदि गरीब किसानों के न्यासी बनते हैं। उन्होंने प्रस्तावित किया कि यदि अनुनय और नैतिक दबाव के सभी तरीके समाज के विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग पर न्यासिता के आदर्श लागू करने में विफल हो जाते हैं तो हिंसा से कमतर सामाजिक मजबूरी की तकनीक या बल–प्रयोग को उनके खिलाफ इस्तेमाल किया जा सकता है। गांधी मानते थे कि किसी भी प्रणाली के तहत उत्पादन मौजूदा प्रणाली और उत्पादन की विधि के साथ श्रम के सहयोग से सम्भव था। यदि मजदूरों और किसानों ने असहयोग का

सहारा लिया तो उत्पादन लुप्त हो जायेगा और धन का संचय, लोगों के कल्याण के लिए कोई गुंजाइश के बिना बन्द हो जायेगा। गांधी ने विद्रोही जमींदारों को न्यासी में कन्वर्ट करने के लिए अहिंसक असहयोग को अपनाने की वकालत की।[9]

हालांकि, गांधी आधुनिकता के एक मजबूत आलोचक थे। अर्थव्यवस्था उत्पादन और प्रौद्योगिकी के बारे में उनकी योजना में मशीन के लिए स्थान है, लेकिन वह मानव श्रम की जगह नही लेगा और कुछ हाथों में सत्ता की एकाग्रता नहीं होगी। उन्होंने भारी उद्योग से अधिक सरल प्रौद्योगिकी को प्राथमिक महत्व दिया। उन्नत प्रौद्योगिकी भारत जैसे देश में विशाल बेरोजगारी का कारण बन सकती है, जबकि सरल तकनीक, बड़े पैमाने पर रोजगार पैदा कर सकती है। इस प्रकार, उन्होंने भारी मशीनरी द्वारा बड़े पैमाने पर उत्पादन की तुलना में अधिक संख्या में लोगों द्वारा उत्पादन को प्राथमिकता दी। वह चाहते थे कि उपयुक्त प्रौद्योगिकी और विचारधारा को आत्म–नियंत्रण की संस्कृति के साथ चलना चाहिए। वह मानवतावादी पर्यावरण और लोगों के अभिन्न विकास में और लोगों के सीधे नियंत्रण में जमीनी स्तर पर एक विकेन्द्रीकृत सामाजिक–आर्थिक, राजनीतिक व्यवस्था में विश्वास रखते थे। उन्होंने ऐसे वैकल्पिक आदत के लिए प्रयास किया जोकि न्यासिता थी और वह साफतौर पर स्थानीय या विशिष्ट सन्दर्भों में प्रासंगिक था। केवल न्यासिता भारतीय सामाज का उत्थान कर सकती है।

निष्कर्ष

अन्त में निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि गांधी जी एक दार्शनिक अराजकतावादी थे, वो एक राज्यविहीन समाज या एक ऐसे राम–राज्य की कल्पना करते हैं, जहां कोई शोषित नहीं होगा, शासन व्यवस्था पूर्णतया भ्रष्टाचार से मुक्त होगी और लोकतन्त्र अपने वास्तविक आशय में तभी सफल होगा। वह मानवतावादी पर्यावरण और लोगों के अभिन्न विकास में और लोगों के सीधे नियन्त्रण में जमीनी स्तर पर एक विकेन्द्रीकृत सामाजिक–आर्थिक, राजनीतिक व्यवस्था में विश्वास करते थे। उन्होंने एक वैकल्पिक आदत के लिए प्रयास किया जो कि न्यासिता थी और वह साफ तौर पर स्थानीय या विशिष्ट सन्र्दभों में प्रासंगिक था। केवल न्यासिता भारतीय समाज का पुर्नउत्थान कर सकती है।

सन्दर्भ ग्रंथ

1. जे.बी. कृपलानी, गॉधी, *हिज लाइफ एण्ड थॉट*, प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली, 2005, पृष्ठ–**25.**
2. राबर्ट पायने, द *लाइफ एण्ड डेथ ऑफ महात्मा गॉधी,* द बाड़ली हैड, लंदन, 1969, पृष्ठ–**161**.
3. मानस राय, *कॉनफ्लिक्ट रीवोल्यूशन एण्ड पीसः अ गॉधियन पर्सपेक्टिव*, लेख, पृष्ठ–**51**.
4. परीक्षा मंथन, जून, 2014, पृष्ठ–**32.**
5. मोहापात्रा, बिस्वजीत, ग्लोबलाइजेशन, *गॉधीयन एथिक्स एण्डइन्क्लूसिव ग्रोथ दि चैलेंजेज बिफोर इण्डिया*, पृष्ठ–**91.**

6. टायबनी, आर्नोल्ड, सन्तोष सी0 वर्मा द्वारा लिखित *महात्मा गाँधी एण्ड वर्ल्ड पीस में उद्धृत*, पृष्ठ–**92**.
7. हिन्दुस्तान टाइम्स, 20 फरवरी, 2014, पृष्ठ–**9**.
8. वी0एन0 राय, *गाँधीगिरीः सत्याग्रह ऑफ्टर हंड्रेड इयर्स*, कावेरी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2003, पृष्ठ–**204**.
9. परीक्षा मंथन, फरवरी, 2009, पृष्ठ–**17**.